प्रातःक्लास 21/4/68 ओमशान्ति अलफ और बे याद है?

ओमशान्ति। बच्चे समझते हैं बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। बाप भी समझते हैं कि हम इन बच्चों को समझाते हैं। यह भी बच्चों को समझाया गया है भक्तिमार्ग के अनेकानेक चित्र हैं। भिन्न–2 नाम से चित्र बना दिये हैं। जैसे बच्चे को नेपाल तरफ भेज देते हैं, वहां मानते हैं पारसनाथ को। उसका बहुत बड़ा मन्दिर है वहां; परन्तु है कुछ भी नहीं। चार दरवाज़े हैं। चार मूर्तियां हैं। चौथे में कृष्ण को रखा है। पहले ऐसे था। अभी शायद बदली भी कर लिया हो। वह पारसनाथ किसको कहते हैं? ज़रूर शिवबाबा को ही कहेंगे। मनुष्यों को पारस बुद्धि भी वही बनाते हैं। चित्र वहां भी तो अनेक देखेंगे। पहले–2 उन्हों को यह समझाना है ऊँच ते ऊँच है भगवान। पीछे है यह सारी दुनियां। सूक्ष्मवतन की तो सृष्टि है नहीं। पहले–2 ऊँच ते ऊँच है भगवान। पीछे होते हैं ल.ना. वा विष्णु। वास्तव में विष्णु का मन्दिर भी रॉंग है। विष्णु चतुर्भुज, चार भुजा वाला कोई मनुष्य होता नहीं। बाप समझाते हैं यह ल.ना. है जिनको ही इकट्ठा विष्णु का रूप दिखाया है। ल.ना. तो दोनों ही अलग–2 हैं। इस सृष्टि में चार भुजा वाला कोई मनुष्य होता नहीं। सूक्ष्मवतन में विष्णु को चार भुजाएं दी हैं अर्थात् दो मिलाकर चतुर्भुज कर दिया है। बाकी ऐसा कोई होता नहीं है। मन्दिर में जो चतुर्भुज दिखाते हैं वह है ही सूक्ष्मवतन का। यहां तो होता ही नहीं। चतुर्भुज को शंख, चक्र, गदा.....आदि दिये हैं। ऐसे तो कुछ भी है नहीं। चक्र भी तो तुम बच्चों को है। नेपाल में विष्णु का बहुत बड़ा चित्र है, क्षीरसागर में दिखाते हैं। पानी में थोड़ा दूध डाल देते हैं। पूजा के दिनों में। वास्तव में चतुर्भुज की पूजा कैसे होगी? इतना लम्बा तो कोई मनुष्य होता नहीं। कई बच्चे लिखते हैं बाबा सूक्ष्मवतन को भी उड़ा देते है। अरे! यह तो समझने की बात है। चार भुजा वाला मनुष्य होता थोड़े ही है। यह ल.ना0 को मिलाकर चतुर्भुज दिखाया है। वास्तव में मिलते भी नहीं हैं। ल(क्ष)मी का जन्म अलग, नारायण का जन्म अलग। राधे का अलग, कृष्ण का अलग। माँ–बाप दोनों के अलग–2। दोनों इकट्ठे फिर कैसे हो सकते हैं? यह भी बुद्धि में आना चाहिए ना। पुरुष बड़ा होता है, स्त्री छोटी आयु की होती है; इसलिए चतुर्भुज तो कोई चीज़ ही नहीं रही। दिखाते हैं तो ज़रूर है कहेंगे; परन्तु बाप समझाते हैं यह भक्तिमार्ग के शास्त्र–चित्र आदि जो भी है इनको भी छोड़ देना चाहिए। अभी भक्तिमार्ग पूरा होता है। वह सभी बात भूल जाओ। अभी तुमको वापस जाना है घर। इन्हों का नाम ही है ल.ना.। बाकी पारसपुरी है। पारसपुरी को गोल्डेन एज कहा जाता है। एक–2 बात क्लीयर की जाती है। जैसे बाप समझाते हैं ऐसे कोई भी विष्णु का अर्थ समझा न सके। जानते ही नहीं हैं। यह तो भगवान खुद समझाते हैं। भगवान कहा जाता है शिवबाबा को। है तो एक ही। एक का नाम भक्तिमार्ग में अनेक रख दिये हैं। तुम अभी अनेक नाम नहीं लेंगे। भक्तिमार्ग में तो बहुत धक्के खाते हैं। तुमने भी खाई है। तो अभी वहां के मन्दिर को देखना है ,फिर उस पर समझाना है कि ऊँच ते ऊँच भगवान है। सुप्रीम सोल निराकार परमपिता परमात्मा। उनकी फिर महिमा भी है। ज्ञान का सागर है, सुख का सागर है। यह तो पहले–2 समझाना है। भक्तिमार्ग में अनेक चित्र हैं। ज्ञानमार्ग में तो ज्ञान सागर एक ही है। वही पतित–पावन सर्व की सद्गति दाता है। तुम्हारी बुद्धि में सारा चक्र है। ऊँच ते ऊँच भगवान। उनके लिए ही गायन है सिमर–2 सुख पाओ.....सिर्फ़ एक बाप को याद करो अर्थात् सिमरण करते रहो। सिमर–2 सुख पाओ, कल–कलेश मिटे सब तन के, जीवन मुक्ति पद पाओ। यह जीवनमुक्ति है ना। बाप से ही यह वर्सा मिलता है। अकेले सिर्फ़ यह तो नहीं पावेंगे। ज़रूर राजधानी होगी ना। गोया बाप राजधानी स्थापन कर रहे हैं। सतयुग में राजा–रानी, प्रजा सभी होते हैं। तुम ज्ञान प्राप्त करते जाते हो तो जाकर बड़े कुल में जन्म लेंगे। बहुत ही सुख मिलते हैं। ताकि फिर वह स्थापना हो जाती है। छी–2 वापस चले जाते हैं। अपने–2 सेक्शन में जाकर ठिकाने लेंगे। इतने सभी आत्माएं एक्टर्स हैं जो फिर नम्बरवार पार्ट बजाने आती हैं। सतयुग में तो बहुत थोड़े–2 ही आवेंगे। फिर वृद्धि को पाते रहेंगे। पहले 4–5 ,फिर 50–100 लाख भी आ जावेंगे। यह भी बुद्धि में आना चाहिए। ऊपर से कैसे आते हैं? ऐसे तो नहीं .....

के बदली दस पत्ते इकट्ठे निकल आवेंगे। कायदे सिरे पत्ते निकलते हैं ना। यह तो बहुत बड़ा झाड़ है। दिखाते हैं एक दिन में लाखों की वृद्धि हो जाती है। पहले तो समझाना है ऊँच ते ऊँच भगवान, पतित–पावन, दुःखहर्ता, सुखकर्ता भी वही है। जो भी पार्टधारी दुःखी होते हैं सभी को सुख देने वाला वह एक ही है। और सभी को दुःख देने वाला फिर है रावण। मनुष्यों को यह पता नहीं है कि बाप आये हैं। जबकि आकर समझे। कई तो समझते–2 भी थिरक जाते हैं। जैसे स्नान करते–2 पानी के अन्दर घुस जाते हैं ना। बाबा तो अनुभवी है। (मिसाल) तालाब था। फिर बाप ने झट निकाल दिया। नहीं तो डूब जाता था; परन्तु ड्रामा में नहीं था। यह भी विषय सागर है। बाप क्षीर सागर तरफ ले जाते हैं; परन्तु माया रूपी ग्राह अच्छे–2 महारथियों को भी हप कर लेती है। जीते जी बाप के गोद से मर कर रावण के गोद में चले जाते हैं। एकदम गटर में जाकर पड़ते हैं। मर पड़ते हैं। तो तुम बच्चों को बुद्धि में हैं ऊँच ते ऊँच बाप , फिर यह रचना रचते हैं। हिस्ट्री–जॉग्राफी सूक्ष्मवतन का तो है नहीं। यह सूक्ष्मवतन आदि सभी हैं भक्तिमार्ग में। ज्ञानमार्ग में कुछ नहीं। भल तुम सूक्ष्मवतन में जाते हो। सा. करते हो, वहां चतुर्भुज देखते हो। (पहले देखा था) चित्र में है ना। तो वह बुद्धि में बैठा हुआ है तो ज़रूर सा. होगा; परन्तु ऐसी कोई चीज़ है नहीं। यह भी भक्तिमार्ग के चित्र हैं। अभी तक भक्तिमार्ग चल रहा है। भक्तिमार्ग पूरा होगा तो फिर यह चित्र रहेंगे नहीं। स्वर्ग में यह सभी बातें भूल जाते हैं। यह ल.ना. है। उनको मिलाकर विष्णु रखे तो भी बुद्धि में ज्ञान है कि यह ल.ना. के दो रूप हैं। चतुर्भुज की पूजा सो ल.ना. की पूजा। चतुर्भुज का मन्दिर या ल.ना. का मन्दिर, बात एक ही है। इन दोनों का ज्ञान और किसको है नहीं। तुम जानते हो इन ल.ना. का राज्य है। विष्णु का राज्य तो नहीं कहेंगे। यह पालना भी तो करते हैं ना। बाबा ने नेपाल में एक वा(बा)री मन्दिर देखा था। कितने वर्ष हो गये। आजकल तो बहुत ही चेंज भी करते रहते हैं। हम गये भी दोपहर के टाइम थे। मन्दिर तो बन्द था। हमारे साथ सिपाही था। उसने जाकर कहा बड़ा जवाहरी गेस्ट आया है। महाराजा के गेस्ट हैं। तो उसने भी समझा कुछ मिलेगा भी। फिर पहले एक दरवाज़ा खोला। हम अन्दर दर्शन कर एक गिन्नी रखे। बोला चार दरवाज़े हैं। समझा चार गिन्नी मिल जावेगा। फिर सभी दिखाई। अभी वह है वा नहीं, कह नहीं सकते हैं। 40 वर्ष में बम्बई, देहली देखो क्या हो गया है। नेपाल भी बदल गया होगा। उस समय किंग किले अन्दर रहता था। कोई से मिलता नहीं था। उनके बिरादरी, उनके कमाण्डर थे। राज्य उनका था। आमदनी बांट कर लेते थे। सभी को वेतन मिलता था। तो वहां भी अच्छे–2 हैं जो इनको मान देंगे। टॉपिक्स यहां से ही बनाकर ले जावें। शिव भगवानुवाच। वहां शिव को तो सभी मानते हैं। शिव भगवानुवाच मैं तुमको राजयोग सिखाता हूँ। अपन को आत्मा समझ मुझे याद करो तो इस योग अग्नि से विकर्म विनाश हों। डिटेल में समझाना पड़े। बोलो, यह भी है गीता। सिर्फ़ गीता में कृष्ण का नाम डाल दिया है। कृष्ण भगवानुवाच तो है नहीं। भगवान है एक। मनुष्य तो 24 अवतार कह देते हैं। फिर कुत्ते–बिल्ले कण–2 में परमात्मा है। यह है बड़ी तो बड़ी ग्लानी। अपने ही लिए 84 लाख जन्म कहते हैं। और मेरे लिए अनगिनत कह देते हैं। यह तो ग़लत है। सभी की ग्लानी कर दी है; इसलिए भारतवासी तमोप्रधान बन पड़े हैं। अभी है कलयुग सृष्टि का भी अंत। इनको कहा जाता है तमोप्रधान। आयरन एज। जो सतोप्रधान थे उन्होंने ही 84 जन्म लिये हैं। जन्म–मरण में तो ज़रूर आना है। जब पूरे 84 लेते हैं तब फिर बाप को आना पड़ता है। फिर पहले नम्बर में। एक की बात नहीं। इनकी तो सारी राजधानी थी ना। फिर ज़रूर होनी चाहिए। बाप सभी के लिए कहते हैं अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो तो योग अग्नि से पाप कट जावेंगे। काम चिक्षा पर बैठ सभी काले हो गये हैं। फिर सांवरा से गोरा कैसे बने सो बाप बैठ सिखलाते हैं। कृ(ष्ण) की आत्मा ज़रूर भिन्न–2 नाम–रूप लेकर आई होगी। जो ल.ना. थे वही 84 जन्मों के बाद फिर वह बनना है। तो उनके ही बहुत जन्मों के अंत में बाप प्रवेश करते हैं। फिर वह सतोप्रधान विश्व के मालिक बनते हैं।

तुम्हारे में पारसनाथ को पूजते हैं। शिव को पूजते हैं। ज़रूर इन्हों को शिव ने ही ऐसा बनाया होगा ना। टीचर तो चाहिए ना। वह है ज्ञान का सागर। अभी सतोप्रधान पारसनाथ बनना है। तो बाप को बहुत प्यार से याद करो। वही सभी के दुःख हरने वाला हैं। यह है कांटों का जंगल । बाप आये हैं फूलों की(का) बगीचा बनाने। बाप अपना परिचय देते हैं मैं साधारण बूढ़े तन में प्रवेश करता हूँ। जो अपने जन्मों को नहीं जानते हैं। भगवानुवाच मैं तुम बच्चों को राजयोग सिखाता हूँ। तो यह ईश्वरीय यूनिवर्सिटी ठहरी ना। एमऑबजेक्ट है ही राजा–रानी बनने का। तो ज़रूर प्रजा भी बनेगी ना। मनुष्य योग–2 बहुत करते आते हैं; परन्तु समझते नहीं हैं। निवृत्ति मार्ग वाले तो अनेक हठयोग आदि करते हैं। वह राजयोग सिखा नहीं सकते। बाप का है ही एक प्रकार का योग। सिर्फ़ कहते हैं अपन को आत्मा समझो, मुझ बाप को याद करो। 84 जन्म पूरे हुये, अभी वापस घर जाना है। अभी पावन बनना है। बाप को याद करो। और सभी को छोड़ दो। भक्ति मार्ग में तुम गाते थे कि आप आवेंगे तो एक आप के संग जोड़ेंगे। तो ज़रूर उससे वर्सा मिला था ना। अभी है भक्तिमार्ग मुर्दाबाद, ज्ञानमार्ग ज़िंदाबाद होता है। आधा कल्प स्वर्ग, फिर है नर्क। रावण राज्य शुरू होता है। ऐसे–2 समझाना चाहिए। अपन को देह न समझो। आत्मा अविनाशी है। आत्मा में ही सारा पार्ट नूँधा हुआ है। जो तुम बजाते हैं। अभी शिवबाबा को याद करो तो बेड़ा पार हो जावेगा। वहां बहुत इनसे मिलेंगे भी। सभी के एड्रेस ले जावेंगे। सभी को मान भी देना है। सन्यासी पवित्र बनते हैं तो कितना उनका मान होता है। सभी माथा झुकाते हैं। पवित्रता की बात पर ही ऊँच–नीच है। देवताएं हैं बिल्कुल ऊँच। सन्यासी फिर भी एक जन्म पवित्र बनते हैं फिर दूसरा जन्म तो विकार से ही लेते हैं ना। देवताएं होते ही हैं सतयुग में। अभी तुम पढ़ते भी हो ,सर्विस भी करते हो। कोई पढ़ते हैं करते नहीं हैं। अर्थात् दूसरे को समझा नहीं सकते हैं; क्योंकि धारणा नहीं होती है। बाप सभी को बैठ आर्शीवाद करें तो सभी स्कॉलरशिप ले लेवें। वह तो भक्तिमार्ग में आशीर्वाद करते हैं। हेड आई विन.....भूरी पड़ी तो हमने जीता। अक्षर पड़ा तो तुमने हराया। सन्यासियों का है यह हाल। उनको जाकर कहेंगे मुझे बच्चा चाहिए आर्शीवाद करो। अच्छा, तुमको बच्चा होगा। बच्ची हुई तो कहेंगे भावी। बाबा ने गुरू तो बहुत किये हैं ना। बच्चा हुआ तो वाह–2 करेंगे। चरणों पर गिरते रहेंगे। अच्छा, फिर बच्चा बीमार हुआ, गुरूजी, बच्चा बीमार हो पड़ा है। हां, दवाई करो यह क(र)ो ठीक हो जावेगा। बच्चा मर गया, बस। रोने–पीटने और गुरू को गाली देने लग पड़े। अरे, यह तो भावी थी। कहेंगे पहले क्यों नहीं कहते थे ऐसी भावी थी। कोई मरे हुये से ज़िंदा हो जाते हैं वह भी ड्रामा में नूँध होगी। आत्मा कहां भी छिप जाती है। तो पड़े रहते हैं। डॉक्टर लोग भी समझते हैं यह मरा पड़ा है। फिर ज़िंदा हो जाते हैं। चिक्षा पर चढ़े हुये भी ज़िंदा हो जाते हैं। कोई साधु को एक ने माना तो बस उनके पीछे ढेर पड़ जाते हैं। तो बहुत ही निर्माणचित्त हो चलना है। अहंकार न रहे। आजकल कोई को अंहकार दिखाया तो दुश्मनी हो जाती है। बहुत ही मीठा होकर चलना है। नेपाल में भी आवाज़ निकलेगा। कोई बड़े आदमी से आवाज़ पिछाड़ी में निकलेगा। अभी तुम बच्चे को महिमा का समय नहीं है। नहीं तो उन्हों का घमण्ड ही उड़ जाये। बड़े आदमी जाग जायें और सभा में बैठ सुनावें तो उनके पिछाड़ी बहुत ही ढेर आ जायें। कोई भी एम.पी. आदि बैठ तुम्हारी महिमा करे कि भारत का राजयोग इन ब्रह्माकुमारियों के सिवाय कोई सिखाये नहीं सकते। ऐसा कोई अभी निकला नहीं है। अभी समय नहीं है। बच्चों को बहुत ही होशियार चमत्कारी बनना है। फलाने–2 भाषण कैसे करते हैं सुनकर सीखना चाहिए। सर्विस करने की भी युक्तियां बाबा बतलाते हैं। बाबा ने जो मुरली चलाई एक्युरेट, कल्प–2 ऐसे चलाई थी। ड्रामा में नूँध है। प्रश्न नहीं उठ सकता। ऐसे क्यों.....ड्रामा अनुसार जो समझाना था वह समझाया। समझाता रहता (हूं)। बाकी जट लोग तो बहुत प्रश्न करेंगे। बोलो, पहले मनमनाभव हो। बाप को जानने से तुम सब कुछ जान जा(वें)गे। अच्छा, बच्चों को गुडमॉर्निंग। नमस्ते।